पेंटिंग

माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम

(225)

भूमिका

पेंटिंग मात्र एक ऐसा कौशल है जिसमें रंगों और उनके सही आनुपातिक प्रयोग के द्वारा हम स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। पेंटिंग से एक सौंदर्यात्मक अनुभूति के निर्माण में भी सहायता मिलती है। यह शिक्षार्थी के दृश्य-बोध का भी विकास करता है और रेखांकन, संरचना, स्थान, लयात्मकता आदि की क्या महत्ता है, इस बारे में जानकारी देने में सहायता करता है।

उद्देश्य

इस कोर्स के उद्देश्य हैं:

- दृश्य-कलाओं का विकास;
- शिक्षार्थी में कौशल, योग्यता और सौंदर्य-बोध संबंधी व्यवहारों का विकास;
- स्थान के विभाजन, लय, संरचना और रेखांकन की महत्ता आदि के बारे में जानकारी का विकास;
- पेंसिल, पेस्टल, जल और तेल-रंग आदि ड्राइंग और पेंटिंग के सामान को लेकर काम करना।

कोर्स का ढांचा

माध्यमिक स्तर के पेंटिंग कोर्स को दो भागों में विभाजित किया गया है:

1. थ्योरी (30 अंक) : (i) भारतीय कला की भूमिका (पाठ 1-4)
   (ii) पश्चिमी कला की भूमिका (पाठ 5-7)
   (iii) समकालीन भारतीय कला की भूमिका (पाठ 8-9)
2. प्रयोगात्मक (70 अंक) :
   (i) वस्तु चित्रण
   एवं
   प्रकृति चित्रण
   (ii) मानव और पशु आकृतियों का चित्रण
   (iii) संयोजन

कोर मॉड्यूल पाठों का प्रति यूनिट वितरण	न्यूनतम अध्ययन का समय	अंक	
		प्रति इकाई	प्रति मॉड्यूल
थ्योरी			
मॉड्यूल-1 भारतीय कला की भूमिका			
पाठ-1 कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक)	7		12
पाठ-2 भारतीय कला का इतिहास और उसका प्रशंसापूर्ण मूल्यांकन (सातवीं से 12वीं शताब्दी तक)	7		
पाठ-3 कला का इतिहास तथा मूल्यांकन (12वीं शती से 18वीं शती तक)	6		
पाठ-4 भारत की लोक कला	7		
मॉड्यूल-2 पश्चिमी कला की भूमिका			08
पाठ-5 पुनर्जागरण	8		
पाठ-6 प्रभाववाद	12		
पाठ-7 घनवाद, अतियर्थाथवाद तथा अमूर्तकला	10		
मॉड्यूल-3 समकालीन भारतीय कला			
पाठ-8 समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार	7		10
पाठ-9 समकालीन भारतीय कला	6		
थ्योरी योग	70		30
प्रयोगात्मक			
पाठ-1 वस्तु-चित्रण तथा प्रकृति चित्रण	55	20	
पाठ-2 मानव और पशु आकृतियों का चित्रण	55	20	
पाठ-3 संयोजन	60	20	
	170	60	
पोर्टफोलियो प्रस्तुति करना (गृह कार्य) (Portfolio submission)		10	
थ्योरी + प्रयोगात्मक कुल योग	240	100	

मॉड्यूल-1 : भारतीय कला की भूमिका

प्रस्ताव

भारतीय लोक कला और ललित कला के इतिहास की परंपरा संभवत: 5000 ईसा पूर्व की है। सिंधु घाटी सभ्यता काल में जो भारतीय कला का प्रथम प्रागैतिहासिक उदाहरण है, हमें असंख्य कलाकृतियां मिलती हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश हमें लगभग 1000 वर्ष की अप्राप्त कड़ी है जिसके बाद मौर्य कला के साथ पहला ऐतिहासिक काल प्रारंभ होता है। सभी कालों में ललित और लोक कला की परंपरा साथ-साथ आगे बढ़ी। प्राचीन भारतीय कला मूलत: धार्मिक प्रकृति की थी जो हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों से प्रभावित हुई और अशोक के समय से शुरू होकर मौर्य काल में फली-फूली और बाद में इसने गुप्त काल तक आते-आते खूब विकास किया। जहां उत्तर भारतीय कला में हमें कुछ स्पष्ट विशेषताएं दिखाई देती हैं, वहीं दक्षिण भारतीय कला का पल्लव, चोल, चालुक्य और होयसाल वंश परंपराओं में उत्कर्ष हुआ। शैव और वैष्णव के गहरे प्रभाव ने द्रविड़ कला और वास्तुकला को विभिन्न आयाम दिए। हमें दक्षिण-भारत (द्रविड़) और उत्तर भारत (नागर) शैलियों का रोचक सम्मिश्रण भी देखने को मिलता है। इसके अलावा मुगल और राजपूत राजाओं के कार्य-काल में और पंजाब, गढ़वाल और जम्मू की पहाड़ियों में स्थानीय शासकों के कार्य-काल में भारत में लघु चित्रकला की समृद्ध परंपरा का अच्छा विकास हुआ।

पाठ-1: भारतीय कला का इतिहास (3000 ई.पू. - 600 शताब्दी)

विषय
• नृत्य करती हुई लड़की
• रामपुरवा बैल का शीर्ष
• अश्वेत राजकुमारी

पाठ-2 : भारतीय कला का इतिहास (7 वीं शताब्दी-12वीं शताब्दी)

विषय
• अर्जुन का चिंतन या गंगावतरण
• कृष्ण गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए
• कोणार्क के सूर्य मंदिर से सुर सुंदरी

पाठ-3 : भारतीय कला का इतिहास (12वीं से 18वीं शताब्दी)

विषय
• गुलेर लघुचित्र
• जैन लघुचित्र
• रासलीला, टेराकोटा

पाठ-4 : भारतीय लोक कला की भूमिका

- पूर्वी क्षेत्र से **कंथा**
- उत्तरी क्षेत्र से **फुलकारी**
- दक्षिणी क्षेत्र से **कोलम**

मॉड्यूल-2 : पश्चिमी कला की भूमिका

08

प्रस्ताव

समकालीन भारतीय कला को समझने के लिए, 10वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य पश्चिमी देशों के विभिन्न कला आंदोलनों को जानना प्रासंगिक होगा। पश्चिम में पुनर्जागरण से यूरोपियन कला के दृष्टिकोण और सौंदर्यबोध में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया और जिसमें अति पुनर्जागरण कलाकारों का मुख्य रूप से योगदान था। पश्चिमी कला में निरंतर शोध और अभिनव परिवर्तन होते रहे और कलाकारों की दृष्टि यथार्थवाद, सादृश्यमूलक दृष्टिकोण से अयथार्थवादी कला के रूपों की ओर जाती रही। तकनीकी और सौंदर्यपरक परिणाम भी वादों जैसे घनवाद, अतियथार्थवाद और अमूर्तवाद के साथ बदलते रहे। इन पश्चिमी कला आंदोलनों के प्रभाव को भारत सहित वैश्विक कला पर देखा जा सकता है। आधुनिक भारतीय कलाकारों ने इसी प्रभाव के अंतर्गत कार्य किया और धीरे-धीरे अपनी पहचान पाने की ओर अग्रसर हुए।

पाठ-5 : पुनर्जागरण काल

विषय	**कलाकार**
• मोनालिसा	लियोनार्डो दा विंसी
• पीयता	माइकल एंजेलो
• नाइट वाच	रेंब्रांट

पाठ-6 : प्रभाववाद और उत्तर प्रभाववाद

विषय	**कलाकार**
• वाटर लिलीज	मॉनेट
• मौलिन डी गैलेट/कैफे	रिनॉयर
• स्टिल लाइफ विद ओनियंस	सिजान
• सनफ्लावर	विंसेट वान गाफ

पाठ-7: धनवाद, अतियथार्थवाद और अमूर्त कला

विषय	**कलाकार**
• मैन विद वायलिन	पब्लो पिकासो

• परसिस्टेंस ऑफ मेमोरी	सलवोदर डाली
• ब्लैक लाइन्स	कांडिस्की

मॉड्यूल-3 : समकालीन भारतीय कला

10

प्रस्ताव

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान मुख्य रूप से यूरोपियन शैली में कला के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए कोलकाता, मुंबई और मद्रास के शहरों में कला के स्कूल स्थापित किए गए। इस काल में ट्रावनकोर से **राजा रवि वर्मा** बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने पश्चिम की यथार्थवादी शैली में प्रसिद्ध पौराणिक दृश्यों को चित्रित किया। कवि **रवींद्रनाथ टैगोर** के भतीजे बंगाल के **अबनींद्रनाथ टैगोर** ने अपनी एक स्थानीय पेंटिंग शैली का विकास किया और इस तरह बंगाल स्कूल के अग्रगामी कलाकार बने। जब यह आंदोलन सारे भारत में फैल रहा था तभी पेरिस में दक्षता प्राप्त **अमृता शेरगिल** ने भारतीय कला के दृश्य-पटल पर कदम रखा। उनकी कलाकृतियों में हम पश्चिमी तकनीक और भारतीय कथा वस्तुओं का सम्मिश्रण पाते हैं। स्वयं **रबींद्रनाथ टैगोर** ने अभिनव अभिव्यंजनात्मक अर्थपूर्ण शैली में पेंटिंग शुरू की। लगभग इसी समय **जेमिनी रॉय** ने लोक-कला के सौंदर्य की खोज की।

इसी के साथ बहुत से युवा भारतीय कलाकारों ने जीवन के प्रति अपने व्यक्तिगत विचारों के साथ अपनी कला को आगे बढ़ाया। जहां मूर्तिकार **प्रदोष दास गुप्ता** और पेंटर **परितोष सेन** ने ''कोलकाता ग्रुप'' की स्थापना में योगदान दिया वहीं **एफ.एन. सौज़ा**, **राजा** और अन्य पेंटरों की कोशिशों के द्वारा बंबई में ''प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप'' की स्थापना हुई।

पाठ-8 : समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार

विषय	कलाकार
• हंस दमयंती	राजा रवि वर्मा
• ब्रह्मचारीज	अमृता शेरगिल
• आट्रियम	गगनेंद्रनाथ टैगोर

पाठ-9 : समकालीन भारतीय कला

विषय	कलाकार
• व्हर्लपूल	कृष्णा रेड्डी
• वर्ड्स एंड सिंबल्स	के.सी.एस. पनिकर
• चर्च इन पेरिस	सौज़ा
• म्यूरल एट कला भवन, शातिनिकेतन	विनोद बिहारी मुखर्जी

प्रयोगात्मक

कुल अंक : 60+10

पार्ट-I : वस्तु चित्रण तथा प्रकृति चित्रण **अध्ययन के घंटे: 55** **अंक : 20**

प्रस्ताव

पेंसिल और रंगों आदि के साथ चित्रण करके मानव-निर्मित अथवा प्राकृतिक वस्तुओं के आकार और स्वरूपों के बारे में आसानी से जाना और सोचा जा सकता है। इससे स्केचिंग करने की आदत बनती है और शिक्षार्थी में बारीकी से देखने और अध्ययन करने की शक्ति का विकास होता है। इस कार्य के लिए शिक्षार्थी को आसानी से घर में उपलब्ध वस्तुओं जैसे कप, प्लेट, गिलास, पुस्तक, पेंसिल बॉक्स आदि का प्रयोग करना चाहिए।

प्रकृति का अध्ययन कर उसके स्वरूपों के बारे में आसानी से जाना जा सकता है। पेंसिल और रंगों के प्रयोग से शिक्षार्थी में जानने पहचानने की शक्ति का विकास होता है और उसकी स्केचिंग करने की आदत बनती है। स्केचिंग के लिए आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक वस्तुओं जैसे पेड़, फूल, फल, पहाड़, पर्वत, साग-सब्जियों आदि का प्रयोग करें।

प्रयोग के लिए सामग्री

पेंसिल, रंग-पेस्टल, पोस्टर रंग, जल-रंग आदि, ब्रश, रंगीन पेंसिल (एचबी-2बी, 4बी, 6बी)। *स्केच पेन का प्रयोग न करें।*

पार्ट-II : मानव और पशु आकृतियाँ **अध्ययन के घंटे : 55** **अंक : 20**

प्रस्ताव

सजीव और निर्जीव वस्तुओं के मूल आकारों को जानना-समझना बहुत महत्वपूर्ण होता है। तीन मूल आकारों को कट-आउट आकार के साथ और कट-आउट आकारों के बिना कागज पर व्यवस्थित करना तथा पुनर्व्यवस्थित करना होता है ताकि सही आकार प्राप्त हो सके।

मानव और पशु आकृतियों को मूल ज्यामितीय आकारों जैसे वर्गाकार, गोलाकार और विभिन्न आकारों के त्रिकोणीय आकारों की सहायता से ड्रा करें। ज्यामितीय आकारों की सहायता के बिना मुक्तहस्त से अभ्यास करें।

प्रयोग के लिए सामग्री

उपर्युक्त आकारों/ज्यामितीय आकारों के कार्ड बोर्ड में कट-आउट्स, रंग, पेंसिल (एचबी-2बी, 4बी, 6बी), ब्रश आदि।

पार्ट-III : संयोजन **अध्ययन के घंटे : 60** **अंक : 20**

प्रस्ताव

सीधे जीवन और प्रकृति से मुक्तहस्त ड्राइंग संयोजन के सभी तत्वों के बारे में जानकारी देगा। मूल डिजायन से शुरू कर आकारों के विभिन्न प्रकारों को जानने के लिए विभिन्न प्रयोग करना। विभिन्न रंगों का प्रयोग संयोजन को एक रूप देगा। संयोजन की संरचना के स्तर को समझने के लिए कोलाज़ को बनाना बहुत सहायक होगा। पिछले पाठों

में दी गई जानकारी की सहायता से सजीव और निर्जीव ज्यामितीय आकारों में लयात्मकता, संतुलन, स्थान, रंग और सामंजस्य को ध्यान में रखते हुए संयोजनों का निर्माण किया जाना चाहिए। रंगीन कट-आउट पेपर, किसी मैगजीन से चित्र या आसानी से उपलब्ध सामग्रियों की सहायता से तथा संयोजन के सभी तत्वों को ध्यान में रखते हुए कोलाज़ बनाने चाहिए।

प्रयोग के लिए सामग्री

पेंसिल (एचबी-2बी, 4बी, 6बी), कोई सख्त पेपर, मार्बल/ग्लेज़ पेपर, रैपिंग पेपर, रंगीन मैगजीन पेपर और पेस्ट करने के लिए कपड़े के टुकड़े, मजबूती से चिपकाने का सामग्री।

पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना **अंक 10**

शिक्षार्थी को कम-से-कम आठ कलाकृतियों के पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना आवश्यक है। जिसमें पोर्टफोलियो तैयारी की तिथि, माउंटिंग तथा रक्षण शामिल हो।

पार्ट-1 : प्रकृति चित्रण या वस्तु चित्रण (कम-से-कम तीन)

1/4 इंपीरियल साइज़ पेपर का प्रयोग करें

- पेंसिल रेखा ड्राइंग में एक
- पेंसिल की टोन के साथ एक, और
- रंगों में एक

पार्ट-2 : मानव और पशु आकृति चित्रण (कम-से-कम तीन)

1/4 इंपीरियल साइज़ पेपर का प्रयोग करें

- पेंसिल रेखा ड्राइंग में एक (मानव/पशु दोनों चित्र के लिए)
- पेंसिल की टोन के साथ एक (मानव/पशु दोनों चित्र के लिए)
- रंगों में एक (मानव/पशु दोनों चित्र के लिए)

पार्ट-3 : संयोजन (कम-से-कम तीन)

1/2 इंपीरियल साइज़ पेपर का प्रयोग करें

- रेखाओं और रंगों में एक
- संयोजन, कोलॉज में एक
- पेस्टल रंगों में एक
- कलम एवं स्याही में एक

मूल्यांकन की योजना

मूल्यांकन पद्धति	समय (घंटों में)		अंक		पार्ट्स
थ्योरी एक पेपर	1½		30		
प्रयोगात्मक (तीन प्रयोगात्मक कार्य+पोर्ट फोलियो प्रस्तुत करना)	3		60+10=70		
पार्ट-I वस्तु तथा प्रकृति चित्रण ● संयोजन और ड्राइंग ● मीडिया ट्रीटमेंट ● प्रस्तुति	1	3	8 8 4	20	I
पार्ट-II : मानव और पशु आकृति चित्रण ● आकारों की व्यवस्था और विषय पर बल ● मीडिया ट्रीटमेंट ● प्रस्तुति	1		8 8 4	20	II
पार्ट-III : संयोजन ● डिजायन और ले-आउट ● मीडिया ट्रीटमेंट ● प्रस्तुति	1		8 8 4	20	III
पोर्टफोलियो प्रस्तुति (गृह कार्य) ● पूर्ण कार्य ● कार्य का स्तर ● प्रस्तुति	अपनी गति पर		3 5 2	10	
कुल				100	